JAIN REFERENCE LIBRARY
ACHARYA SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA
12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

1521 1521_Search_Results_For_rag

(1) इन्द्रगोपक , (2) परिग्रह-मुक्ति ही मुक्ति है , (3) प्रज्ञापरीषहजय, (4) मृगांककुमारी पद्मावती चोपाई , (5) अंगारग, (6) अंजलिप्रग्रह संभोज , (7) अंतरगए, (8) अंतरगत, (9) अंतरगति, (10) अंतरगामम्मि, (11) अंतरगिरिपरिरओ, (12) अंतरगृह में धर्मकथा निषिद्ध , (13) अंतरघट, (14) अंद्रगोप, (15) अकृतप्राग्भार, (16) अक्खरगया, (17) अक्षरगता, (18) अक्षरज्ञान, (19) अक्षिप्रग्राही, (20) अचित्त महास्कंधमां पराघातत्व अंगे विभिन्न मंतव्यो, लेखक - त्रैलोक्यमंडनविजय, (21) अचित्तपरिग्रह, (22) अच्छ्णघरगा, (23) अच्छेरगा, (24) अजीरगं, (25) अजीवपारिग्गहिया, (26) अजीवपारिग्रहिकी क्रिया, (27) अञ्जलिप्रग्रहसंभोज, (28) अड्ढोरुग, (29) अड्ढोरुगो, (30) अणंतरगढिया, (31) अणरागिय, (32) अणुरागयं, (33) अणुरागु, (34) अण्णतरग, (35) अत्थाणीवरगओ, (36) अधरराग, (37) अधिमरगा, (38) अनंतरगति द्वार से सिद्धों की विचारणा, (39) अनंतरागम, (40) अनक्षरगता भाषा, (41) अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (42) अनार्यक्षेत्रगमन निषिद्ध , (43) अनुरङ्गिनी, (44) अनुरागः, (45) अनुसारगति :, (46) अनुसूरिगमन, (47) अन्तरङ्गक्रिया, (48) अन्तरङ्गच्छेद, (49) अन्तरङ्गज दुःख, (50) अन्तरङ्गयोग, (51) अन्यतीर्थिकों की दर्शन प्रज्ञापना , (52) अन्योन्यप्रगृहीतत्व, (53) अन्योऽन्यप्रगृहीतम्, (54) अपरगृहीतागमन, (55) अपरवैराग्यम्, (56) अपरिगहियागमणे, (57) अपरिगृहिता गमन, (58) अपरिगृहितागमन अतिचार, (59) अपरिगृहीता, (60) अपरिगृहीता देवी, (61) अपरिगृहीतागमन, (62) अपरिग्गहो, (63) अपरिग्रह, (64) अपरिग्रह अणुव्रत, (65) अपरिग्रह आराधना का फल , (66) अपरिग्रह महाव्रत, (67) अपरिग्रह महाव्रत आराधक के अकल्पनीय द्रव्य , (68) अपरिग्रह महाव्रत आराधना की प्रतिज्ञा , (69) अपरिग्रह महाव्रत की पाँच भावनाएँ , (70) अपरिग्रह महाव्रत की पादप की उपमा , (71) अपरिग्रह महाव्रत की भावना , (72) अपरिग्रह व्रत, (73) अपरिग्रह संवर, (74) अपरिग्रहः, (75) अपरिग्रहमहाव्रत, (76) अपरिग्रहव्रतम्, (77) अपरिग्रही , (78) अपरिग्रही श्रमण को पद्म की उपमा , (79) अपरिग्रहीतागमन , (80) अपरिमियपरिग्गहं, (81) अपवरग, (82) अपवरगो, (83) अप्रगट सज्झायसंग्रह, (84) अप्रज्ञापनीयाः, (85) अप्रशस्त राग, (86) अब्भंतरगे, (87) अभयचन्द्रगणि, (88) अभयदेवसूरि (मलधारगच्छीय), (89) अभरगुरु, (90) अभ्यग्रगबोधिः, (91) अमरगणि, (92) अमरगुप्त चरित , (93) अमरगुप्तचरित्र अथवा अमरतरंग, (94) अमरगुरु, (95) अमरसूरि (नागेन्द्रगच्छीय), (96) अयकरग, (97) अरंजरग, (98) अरगंतरं, (99) अरगचा, (100) अरगजा, (101) अरगाउत्तासिया, (102) अरघजा, (103) अरघट्टघटीनिवहादि :, (104) अरघल, (105) अरुग, (106) अरुगं, (107) अर्चिमारग, (108) अलोक प्रज्ञप्ति, (109) अवक्रगामी जीवोना गुणो, लेखक - विमलचन्द्रसागर, (110) अवरगज्जभो, (111) असंप्रग्रह :, (112) असंप्रग्रहता, (113) असंप्रज्ञातसमाधिः, (114) असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, (115) अस्थिरप्रज्ञाः, (116) अस्वाध्याय : चन्द्रग्रहण-सूर्यग्रहण , (117) अस्वाध्यायिक-परिज्ञान हेतु कालप्रेक्षा , (118) अहरगतिगमणं, (119) अहापरिग्गहिए, (120) अहारग, (121) अज्ञानिक, (122) आंटरगमादि, (123) आगन्त्रगार , (124) आचार - प्रज्ञप्ति , (125) आचाराग्र, (126) आचाराग्र (आचारचूला) : उत्तरतंत्र , (127) आचाराग्र का समवतार , (128) आज्ञाभंग का परिणाम : चन्द्रगुप्त-चाणक्य दृष्टांत , (129) आज्ञासुन्दर (खरतरगच्छीय), (130) आत्तप्रज्ञाहा, (131) आत्मप्रज्ञैषिन् , (132) आत्मरागरास, (133) आदेश्वर जिनालय, कतारगाम, मेइन रोड, सुरत, (134) आदेश्वर (लाडवा श्रीमाळीनुं) जिनालय, कतारगाम, सुरत, (135) आदेश्वर - घरदेरासर जिनालय, अच्छारी, उमरगाम, वलसाड, (136) आदेश्वर जिनालय, कैलासनगर, मजुरागेट, सुरत, (137) आदेश्वर जिनालय, सोळसुंबा, उमरगाम, वलसाड, (138) आनन्दमुनि (रत्नाकरगच्छीय), (139) आनन्दवर्धन (खरतरगच्छीय), (140) आनन्दसूरि (नागेन्द्रगच्छीय), (141) आप्तप्रज्ञाहा, (142) आभीरगविसय, (143) आभ्यन्तर परिग्रह, (144) आभ्यन्तर परिग्रह से पाश से बद्ध प्राणी , (145) आभ्यन्तर परिग्रह से विरत पण्डित , (146) आमदेवसूरि (संडेरगच्छीय), (147) आयंसघरगं, (148) आयारगोअर, (149) आयारग्ग, (150) आरगय, (151) आरघट्टिकम्, (152) आरम्भ परिग्रह विरत कर्मो का अन्त करने वाला होता है , (153) आरिग, (154) आरुग्ग, (155) आरुग्गबोहिलाभो, (156) आर्य और अनार्य, आर्य प्रज्ञावान और अनार्य प्रज्ञावान , (157) आशुप्रज्ञ, (158) आसतरगा, (159) आहारग, (160) आहारगं, (161) आहारगंगोवंगणाम, (162) आहारगत्तं, (163) आहारगबंधण, (164) आहारगमो, (165) आहारगसंघायणाम, (166) आहारगसमुग्घात, (167) आहारग्रहण-विधि, अभिग्रह , (168) आहारपरिज्ञा, (169) इंगित-आकारसम्प्रज्ञ , (170) इंदपुरग, (171) इङ्गिताकारसम्प्रज्ञ, (172) इडुरग, (173) इड्डरग, (174) इत्तरियपरिग्गहियागमणे, (175) इत्वपरिगृहिता गमन, (176) इत्वपरिगृहीतागमन अतिचार, (177) इत्वर परिगृहीतागमन, (178) इत्वर परिगृहीतापरिगृहीतागमन, (179) इत्वरिका परिग्रहीतागमन, (180) इत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमन, (181) इन्द्रगिरि, (182) इन्द्रगुरु, (183) इन्द्रगोपक, (184) इन्द्राग्नि, (185) इन्द्रिय रागथी हानि, (186) इषत्प्राग्भारा , (187) इषत्प्राग्भारा पृथ्वी का प्रमाण , (188) इषत्प्राग्भारा, (189) इषुकार कथा भृगु पुरोहित कथा, (190) ईश्वरगतगुणाः, (191) ईश्वरसूरि (संडेरगच्छीय), (192) ईषत्प्राग्भार, (193) ईषत्प्राग्भारा , (194) ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी, (195) ईसिंपब्भारगओ, (196)

ईसीपब्भारगए, (197) ईहामृग, (198) उंडेरग, (199) उंडेरगा, (200) उक्कारिग, (201) उक्खित्तचरगा, (202) उक्खित्तचरगो, (203) उक्खित्तणिक्खित्तचरगा, (204) उच्चरग, (205) उच्छुमेरगं, (206) उत्तरगंधारा, (207) उत्तरगज्जभो, (208) उत्तरगुण, (209) उत्तरगुण : समिति आदि , (210) उत्तरगुण के प्रत्याख्यान के 10 प्रकार, (211) उत्तरगुण निर्वर्तना, (212) उत्तरगुण प्रत्याख्यान, (213) उत्तरगुणकल्पिक, (214) उत्तरगुणनिर्मित :, (215) उत्तरगुणनिर्वर्तनाधिकरण, (216) उत्तरगुणनिर्वर्त्तित :, (217) उत्तरगुणपच्चक्खाण, (218) उत्तरगुणलद्धिं, (219) उत्तरगुणा, (220) उत्तरगुणाः, (221) उत्तरगुणे, (222) उत्तरगोग्रह, (223) उदगवारगसमाणं, (224) उदयचरग, (225) उदयधर्म (रत्नाकरगच्छीय), (226) उदयपद्म (खरतरगच्छीय), (227) उदयवल्लभसूरि (रत्नाकरगच्छीय), (228) उदराग्नि, (229) उदराग्निप्रशमन, (230) उदाइमारग, (231) उदायिमारगो, (232) उन्मारग, (233) उपधि परिग्रह नहीं , (234) उपनीतरागत्व, (235) उपराग, (236) उपसर्गपरिज्ञा, (237) उरग, (238) उरगपरिसप्पा, (239) उरगविही, (240) उरगास्त्र, (241) उवगारग्ग, (242) उवचरगो, (243) उवनगरगामं, (244) उवराग, (245) उवरिग, (246) उव्वरग, (247) ऊरुगं, (248) ऊरुघंटा, (249) ऋग्वेद, (250) ऋग्वेदः, (251) ऋघनाथ, (252) ऋजु - ऋजुप्रज्ञ और वक्र - वक्रप्रज्ञ , (253) ऋजु अने वक्रगति , (254) ऋजु प्राज्ञ, (255) ऋजुप्रज्ञ, (256) ऋजुप्रज्ञत्वं, (257) ऋतंभराप्रज्ञा, (258) एक समय में अनन्तरागत चौबीसदंडकों में अन्त :क्रिया का प्ररूपण, (259) एकेन्द्रियवैराग्यम्, (260) एगसरग, (261) एगाहिगारिगा, (262) एरग, (263) एरगा, (264) ओव्वरग, (265) कंमारगाम, (266) कंमारग्गाम, (267) कक्खारुग, (268) कटोरग, (269) कट्टरिगा, (270) कट्ठोरग, (271) कणइरगुम्म, (272) कनककवि (खरतरगच्छीय), (273) कमलचन्द्र (खरतरगच्छीय), (274) कमलसंयम उपाद्धयाय (बृहद्खरतरगच्छीय), (275) कमारगाम, (276) कम्मारग्गाम, (277) करकरिग, (278) करगर, (279) करगिल्ल, (280) करग्रह, (281) करघायल, (282) करतल परिगृहीत, (283) कर्मकारग्राम, (284) कर्मजा प्रज्ञा, (285) कर्मपरिग्रह, (286) कर्मशत्रुघ्न, (287) कर्मारग्राम, (288) कलह-उपेक्षा से सर्वनाश : गिरगिट हाथी दृष्टांत , (289) कल्याणचन्द्र (खरतरगच्छीय), (290) कल्याणतिलक उपाध्याय (खरतरगच्छीय), (291) काम राग, (292) कामराग, (293) कामरागः, (294) काया के स्वरूप की विचारणा से वैराग्य की पुष्टि, (295) कारग, (296) काराग्रेह, (297) किंदृग्विकुर्वणा, (298) किन्नरगीत, (299) किरगिरइ, (300) कीर्तिरत्नसूरि (खरतरगच्छीय), (301) कीर्तिरत्नसूरिगीत, (302) कीर्तिरत्नसूरिगीतम, (303) कुंचवीरग, (304) कुंथुनाथ (चौमुखी) जिनालय, संजाण, उमरगाम, वलसाड, (305) कुंथुनाथ जिनालय, सरीगाम, उमरगाम, वलसाड, (306) कुढेरग, (307) कुमारगाम, (308) कुमारगिरि, (309) कुमारगिरिनगर, (310) कुमारगिरिमंडणश्रीशांतिनाथ-स्तवन, (311) कुमारग्राम, (312) कुम्मारगाम, (313) कुरगडु ऋषि रास , (314) कुरगडुमहर्षिगीत, (315) कुरुग, (316) कुलकरगंडिका, (317) कुलकरगण्डिका, (318) कुलगरगंडिया, (319) कुव्वरग, (320) कुशाग्रगिरि, (321) कुसुमश्री रास, मृगापुत्र चोपाई , (322) कूरगडुअ, (323) कूरगडुक, (324) कूरगडुक मुनि, (325) कूर्मारग्राम, (326) कृमि राग, (327) कृमिरागकम्बल, (328) कृष्टिशृङ्ग, (329) कृष्णगोपी विरहमेलापक भ्रमरगीता , (330) कृष्णमृग, (331) केवलि प्रज्ञप्त धर्म की अप्राप्ति , (332) केवलि प्रज्ञप्त धर्म की प्राप्ति , (333) केवलि प्रज्ञप्त धर्म श्रवण के अनुकूल काल , (334) केवलि प्रज्ञप्त धर्म श्रवण के अनुकूल वय , (335) कैन्नरगीत, (336) कोंकणगदारग, (337) क्षिप्रगति, (338) क्षेत्रज्ञ, (339) क्षेत्रज्ञान, (340) क्षेमराज (खरतरगच्छीय), (341) खक्खरग, (342) खरग, (343) खरतरगच्छ, (344) खरतरगच्छ पट्टावली (संस्कृत), (345) खरतरगच्छपट्टावली, (346) खरतरगुरुगुणवर्णनछप्पय, (347) खरिगा, (348) खुड्डियायारग, (349) खेमराज (खरतरगच्छीय), (350) गग्गरग, (351) गणधरनिश्रा में वस्त्रग्रहण , (352) गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान ये चार वस्तु ऊपर के देवों में हीन होती है , (353) गर्भपातजन्य मृगापुत्र का रोगों से पीड़ित होना, (354) गीतार्थ और केवली : प्रज्ञप्ति में तुल्य , (355) गुणदेवसूरि (नागेन्द्रगच्छीय), (356) गुणधीरगणि, (357) गुणरत्नसूरि (खरतरगच्छीय), (358) गुणरत्नसूरि (नागेन्द्रगच्छीय), (359) गुणरागः, (360) गुणरागी, (361) गुणसुन्दरसूरि (मलधारगच्छीय), (362) गुरुगति, (363) गुरुगीत, (364) गुरुगुण छत्रीसी, (365) गुरुगुण स्तवन , (366) गुरुगुणरत्नाकरकाव्य, (367) गुरुगुणवर्णन, (368) गुरुगुणषटपट, (369) गृद्रघ्रपृष्ठमरण, (370) गृद्रघ्रोलीन, (371) गोचराग्र का अर्थ , (372) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, जिज्ञासा - राजहेमविजय, (373) गोबरगेस वगेरे गेसो सचित्त के अचित्त ?, समाधान - मलयगिरि-प्रेमहंसविजय, (374) गोब्बरगाम, (375) गोरगिरि, (376) गोरिग, (377) गोर्बरग्राम, (378) गौतम ने मृगापुत्र के पूर्वभव के सम्बन्ध में पूछा, (379) गौतम ने मृगापुत्र को देखा, (380) गौरगिरि, (381) गौरमृग, (382) घरघंट, (383) घरघरग, (384) घरघुला, (385) घाणेन्द्रियरागोपरति, (386) घुरघुर, (387) घुरुघुर, (388) घुरुघुरि, (389) घुरुघुरुघुरंत, (390) घोरगुण, (391) चंद्रगुप्त 16 स्वप्न चोपाई , (392) चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न, (393) चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न सज्झाय, (394) चंद्रगुप्त मौर्य, (395) चंद्रसेन चंद्रघौत नाटकीया प्रबंध, (396) चउरग, (397) चउहथ (संडेरगच्छीय), (398) चक्रगत, (399) चक्षुरिन्द्रिय रागोपरति, (400) चन्द्रकुल (चन्द्रगच्छ) का संक्षिप्त इतिहास , (401) चन्द्रगति, (402) चन्द्रगुप्त, (403) चन्द्रगुप्त चौढालिया , (404) चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण का प्ररूपण, (405) चन्द्रघोष, (406) चन्द्रज्ञप्ति, (407) चन्द्रप्रज्ञप्ति, (408) चन्द्रप्रभ (नागेन्द्रगच्छीय), (409) चन्द्रप्रभसूरि (नागेन्द्रगच्छीय), (410) चन्द्रशृङ्ग, (411) चरग, (412) चराचरगुरू, (413) चरुग, (414) चर्तुभुज वैरागी, (415) चारित्रगणि, (416) चारुगण, (417) चारुचन्द्र (खरतरगच्छीय), (418) चिकूराग्र, (419) चित्रगति, (420) चित्रगुप्त, (421) चित्रगुप्ता, (422) चित्रान्तरगण्डिका, (423) चित्रान्तरगण्डिका, (424) चीरिग, (425) चैत्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (426) चोरग, (427) चोराग, (428) चौबीसदंडकों में अनन्तरागतादि की अन्त :क्रिया का प्ररूपण, (429) छत्रग्रा, (430) छद्मस्य वीतराग, (431) छेदसूत्रज्ञाता अरहस्यधारक , (432) जंबू प्रज्ञप्ति बालावबोध, (433) जंबूचरित,जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति बालावबोध , (434) जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति

बालावबोध, (435) जंबूद्वीपनी ऊंडाई अने ऊंचाई, लेखक - विरागचन्द्रसागर, (436) जठराग्नि, (437) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, (438) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, (439) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिचूर्णी, (440) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिटीका, (441) जयतिलकसूरि (रत्नाकरगच्छीय), (442) जयदेवसूरि (खरतरगच्छीय), (443) जयधर्म (खरतरगच्छीय), (444) जयसागर (खरतरगच्छीय), (445) जयसागर उपाध्याय (खरतरगच्छीय), (446) जरगो, (447) जरगोजी, (448) जरग्गव, (449) जात्रिगु, (450) जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (451) जिणदेवसूरिगीत, (452) जितरागद्वेषः, (453) जिन प्रतिमास्थापना रास, गीतार्थ पदावबोध, वीतराग स्तवन , (454) जिनकुशलसूरि (खरतरगच्छीय), (455) जिनचन्द्रसूरि (खरतरगच्छीय), (456) जिनचन्द्रसूरि (खरतरगच्छीय-पिप्पलक शाखा), (457) जिनदत्तसूरि (खरतरगच्छीय), (458) जिनपतिसूरि (खरतरगच्छीय), (459) जिनपद्मसूरि (खरतरगच्छीय), (460) जिनप्रबोधसूरि (खरतरगच्छीय), (461) जिनप्रभसूरि (खरतरगच्छीय), (462) जिनप्रभसूरि (लघुखरतरगच्छीय), (463) जिनप्रभसूरिगीत, (464) जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण (आचार्य), (465) जिनभद्रसूरि (खरतरगच्छीय), (466) जिनभद्रसूरिगीतम्, (467) जिनभद्रसूरिघुवड, (468) जिनमाणिक्यगणि (खरतरगच्छीय), (469) जिनरत्नसूरि (खरतरगच्छीय), (470) जिनराजसूरि (खरतरगच्छीय), (471) जिनवर्धनसूरि (खरतरगच्छीय पिप्पलक शाखा के प्रवर्तक), (472) जिनवर्धनसूरि (खरतरगच्छीय), (473) जिनवल्लभसूरि (खरतरगच्छीय), (474) जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन, (475) जिनवल्लभसूरिगुरुगुणवर्णन, (476) जिनसमुद्रसूरि (खरतरगच्छीय), (477) जिनसिंहसूरि (खरतरगच्छीय), (478) जिनसिंहसूरि (लघुखरतरगच्छीय), (479) जिनसिंहसूरिगीत, (480) जिनहर्षसूरि (खरतरगच्छीय-पिप्पलक शाखा), (481) जिनेन्द्रगुणसम्पत्ति, (482) जिनेश्वरसूरि (खरतरगच्छीय), (483) जिनोदयसूरिगुणवर्णन, (484) जिनोदयसूरी (खरतरगच्छीय), (485) जीव उत्पत्ति नी सज्झाय (या) (तंदुल वेयाली सूत्र सज्झाय या गर्भावास सज्झाय या वैराग्य सज्झाय), (486) जीवपारिग्रहिकी क्रिया, (487) जीवविचारग्रंथ बालावबोध , (488) जैन धर्मसंबंधी ऐतिहासिक संशोधननी साम्रगी, लेखक - मुक्तिमंडनविजय, (489) ज्ञपरिज्ञा, (490) ज्ञान से संयम का परिज्ञान , (491) ज्ञानगर्भं वैराग्यम्, (492) ज्ञानसागरसूरी (रत्नाकरगच्छीय), (493) टुप्परग, (494) डंडियपरिग्गहे, (495) डहरगं, (496) डेरग, (497) डेरगं, (498) डेरागाजीखान, पंजाब-सिंध, (499) णगरग, (500) णगरगुत्तिय, (501) णयरगुत्तिय, (502) णागरगो, (503) णिंबारग, (504) णिक्खित्तचरगा, (505) णिच्चरिगयंसणं, (506) णियाणमररगे, (507) णिरग्घ, (508) णिरग्घ (नि + ली), (509) णिरागति, (510) णिवुड्ढेमारगे, (511) ण्होरगं, (512) तक्करघराणि, (513) तणहारिगो, (514) तत्त्वपरिज्ञानम्, (515) तमिश्रागुहा, (516) तरुगणगणो, (517) तरुगणा, (518) तामिस्त्रगुहक, (519) तामिस्त्रगुहकूट, (520) तारगा, (521) तारग्गं, (522) तारग्गहा, (523) तिमिश्रगुहा, (524) तिमिस्रगुहा, (525) तिमिस्रगुहाकूट, (526) तिरिघट्टना, (527) तिलकसूरी [मलधारगच्छीय], (528) तिलहारगकपट्ठगो, (529) तीन प्रकार का विषयानुराग , (530) तीव्रतर वैराग्यम्, (531) तुंडेरग, (532) तुरग, (533) तुरगमुह, (534) तोमरग्गं, (535) तोमरिगुंडि, (536) त्रागउ, (537) त्रागलउं, (538) त्रागु, (539) त्रिगडू, (540) त्रिगर्त, (541) त्रिगवि, (542) त्रिगुणात्मकज्ञानम्, (543) त्रिगुणु, (544) त्रिगुप्त (25 आवश्यक), (545) त्रिगुप्ति, (546) त्रिगुप्ति संयत , (547) त्रिज्ञ, (548) थारापद्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (549) थारुगिण, (550) थारुगिणिया, (551) थिरगुत्त, (552) थिरग्गहत्थे, (553) थुरग, (554) दंडकविचारगर्भित स्तवन , (555) दगवारग, (556) दद्दरग, (557) दद्दरिगा, (558) दरगय, (559) दरगील, (560) दवकारगा, (561) दारगरूवं, (562) दारगसाला, (563) दारगोउर, (564) दारुग, (565) दारुगदंडे, (566) दावारगं, (567) दिक्करिगा, (568) दिह्वेन्द्रियरागोपरति, (569) दीक्षारागः, (570) दीन और अदीन, दीन प्रज्ञावान और अदीन प्रज्ञावान , (571) दुःखगर्भितवैराग्यम्, (572) दुःप्रगाह, (573) दुरग, (574) दुरगा, (575) दुराघर्ष, (576) दुवक्खरग, (577) दूरगतो, (578) दूरघ्राणत्व, (579) दृढानुरागः, (580) दृष्टिराग, (581) दृष्टिरागः, (582) दृष्टचनुरागः, (583) देवकी को एक संघाटक के ही पुनरागमन की शंका, (584) देवलोगपरिग्गहिय, (585) देवोद समुद्रगत चन्द्र-सूर्यो के चन्द्र-द्वीपों का प्ररूपण, (586) देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानं, (587) देसराग, (588) देसरागाणि, (589) दोरग, (590) दोषपरिघात विनय, (591) द्दष्टिराग :, (592) द्रव्य-भाव परिग्रह , (593) द्वारघटना, (594) द्वीप-सागरप्रज्ञप्ति, (595) द्वीपप्रज्ञप्ति, (596) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, (597) द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसङ्ग्रहणी, (598) धणियतरागं, (599) धनसार्थवाह की कारागृह से मुक्ति, (600) धम्मकरगो, (601) धम्माणुराग, (602) धरग्ग, (603) धर्म प्रज्ञापना , (604) धर्मप्रज्ञप्ति, (605) धर्मरागः, (606) धर्मरागी, (607) धर्मसागर (संडेरगच्छीय), (608) धर्मसागरसूरि (संडेरगच्छीय), (609) धर्मसुन्दर वाचक (खरतरगच्छीय-पिप्पलकशाखा), (610) धारागृह, (611) धिम्मरगो, (612) धीम्मरग, (613) धूम्रमारग, (614) धोरगिणि, (615) धोरिगिणी, (616) धोरुगिण, (617) धोरुगिणि, (618) नंदिरागे, (619) नंदीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र बालावबोध , (620) नगरगोत्तिय, (621) नगरगोयर, (622) नन्दशृङ्ग, (623) नरग, (624) नरगीत, (625) नवकारमहामन्त्रगीत, (626) नागपरिज्ञापनिका , (627) नागपुरगजलवर्णन, (628) नागेन्द्रगच्छ, (629) नागेन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (630) नाणाविरागो, (631) नापितक्षुरग्रहम्, (632) नारगी, (633) नारिग, (634) निगोदविचारगर्भित महावीर स्तवन , (635) निरंतरगो, (636) निरघोष, (637) निराग, (638) निरागार, (639) निरागारं, (640) निर्यापकपरिग्रह, (641) निषिद्ध क्षेत्रगमन के हेतु , (642) निष्टपरिग्रह, (643) निष्परिग्रह, (644) निष्परिग्रहः, (645) नीरघोख, (646) नीलमृग, (647) नृगति, (648) नेउरहारिगा, (649) नेमिजिन रागमाला स्तवन , (650) नेमिनाथ भ्रमरगीता , (651) नेमीश्वरउरगानौ, (652) नेमीश्वरगीत, (653) नोआगमभावराग, (654) न्यायसुन्दर उपा० (खरतरगच्छीय), (655) पंडरग, (656) पंडरगाईण, (657) पंडुरंग, (658) पंडुरग, (659) पउमराग, (660) पखरगत, (661) पग्गहियतरगं, (662) पञ्चप्रज्ञप्त, (663) पञ्चप्रज्ञप्तिक, (664) पडिचरगा, (665) पडियरग, (666) पडियरगा, (667) पडिरिग्गअ, (668) पडिसंथारगं, (669) पतणुरागसंजुत्त, (670) पतरगणियभावणा, (671) पत्तहारग, (672)

पद्ममन्दिरगणि (खरतरगच्छीय), (673) पद्मराग, (674) पद्मरागमय, (675) पद्मरागा, (676) पनरागति, (677) पब्भारगति, (678) पब्भारगय, (679) पयरग, (680) परंपरगए, (681) परंपरगठिया, (682) परंपरगति द्वार से सिद्धों की विचारणा, (683) परंपरघाए, (684) परग, (685) परगडउ, (686) परगति, (687) परगामी, (688) परगास, (689) परगृहिता देवी, (690) परग्घ, (691) परग्राम, (692) परग्रामविषयक दूतीपिंड, (693) परघ, (694) परघउ, (695) परघल, (696) परघलतउ, (697) परघलि मनि, (698) परघात, (699) परघातनाम, (700) परघालि, (701) परघु, (702) परदारगमन, (703) परवैराग्यम्, (704) परस्परगुणनिकाय, (705) परागति, (706) पराघउ, (707) पराघाइ, (708) पराघाए, (709) पराघात, (710) पराघात नामकर्म, (711) पराघातनाम, (712) पराघातनाम कर्म, (713) पराघाय, (714) पराघायनाम, (715) परिगय, (716) परिगर, (717) परिगलत्स्त्रोत :, (718) परिगालण, (719) परिगिज्झ्क्त, (720) परिगीयं, (721) परिगुव्वति, (722) परिगृहीत प्रतिमा और उसके प्रकार , (723) परिगृहीता, (724) परिगोह, (725) परिग्गह, (726) परिग्गहसण्णा, (727) परिग्गहसन्ना, (728) परिग्गहिया, (729) परिग्गाहिय, (730) परिग्रह, (731) परिग्रह अनुप्रेक्षा , (732) परिग्रह आस्त्रव, (733) परिग्रह का उपसंहार, (734) परिग्रह का स्वरुप , (735) परिग्रह का स्वरूप, (736) परिग्रह की व्याख्या, (737) परिग्रह के छह प्रकार , (738) परिग्रह के द्रव्य, क्षेत्र , (739) परिग्रह के निकृष्टता , (740) परिग्रह के नौ प्रकार , (741) परिग्रह के परिणाम , (742) परिग्रह के पर्यायवाची नाम , (743) परिग्रह के फल, (744) परिग्रह के लिए प्रयत्न, (745) परिग्रह को वृक्ष की उपमा, (746) परिग्रह दर्पिका-कल्पिका प्रतिसेवना , (747) परिग्रह परिमाण, (748) परिग्रह परिमाण रास , (749) परिग्रह पाप, (750) परिग्रह पाप का फल दुःख , (751) परिग्रह पापस्थान, (752) परिग्रह महाभय , (753) परिग्रह विरत पापकर्म विरत होता है , (754) परिग्रह विरति, (755) परिग्रह से दुःख - अपरिग्रह से सुख , (756) परिग्रहः, (757) परिग्रहक्रिया, (758) परिग्रहत्याग की निष्पत्ति , (759) परिग्रहत्याग प्रतिमा, (760) परिग्रहत्यागप्रतिमा, (761) परिग्रहत्यागमहाव्रत, (762) परिग्रहपरिमाणाणुव्रत, (763) परिग्रहपरिमाणाणुव्रतातिचार, (764) परिग्रहपरिमाणुव्रत, (765) परिग्रहविरमण, (766) परिग्रहविरमण व्रत, (767) परिग्रहसंज्ञा, (768) परिग्रहानंदी, (769) परिग्रहानन्द, (770) परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान, (771) परिग्रहिकी क्रिया, (772) परिघ, (773) परिघउ, (774) परिघट्टयंत, (775) परिघट्टिया, (776) परिघल, (777) परिघा, (778) परिघासिय, (779) परिघासियं, (780) परिघासेउं, (781) परिघित्तव्वा, (782) परिघुम (परि + घूर्ण), (783) परिघोल (परि + घूर्ण्), (784) परिघोलण, (785) परिघोलणं, (786) परिघोलेमाणे, (787) परिचारग, (788) परिज्ञा, (789) परिज्ञात-अपरिज्ञात की अपेक्षा पुरुषों के चतुभँगों का प्ररूपण, (790) परिज्ञातकर्म मुनि, (791) परिज्ञातकर्मा, (792) परिज्ञातपञ्चाश्रव, (793) परिज्ञानं, (794) परियारग, (795) परिहेरगं, (796) पर्युषणा में क्षेत्रगमन-सीमा, भिक्षाचरी-क्षेत्र , (797) पवरगवल, (798) पसाहणघरगं, (799) पहाड़ियाराग, (800) पहुराज (खरतरगच्छीयश्रावक), (801) पाँच प्रकार की परिज्ञा , (802) पाँचवे अपरिग्रह महाव्रत की पाँच भावनाएँ , (803) पाण्डुराग, (804) पाण्डुराग्ङ, (805) पापी श्रुगाल शिकार खोजने लगे, (806) पायदद्दरग, (807) पारग, (808) पारगए, (809) पारगय, (810) पारग्गह, (811) पारिग, (812) पारिगा, (813) पारिग्रहिकी, (814) पारिग्रहिकी क्रिया, (815) पारिग्रापिकी-क्रिया, (816) पारिग्राहिकी क्रिया, (817) पारिग्राहिकी-क्रिया, (818) पारिहेरग, (819) पार्श्वचन्द्र (पार्श्वचन्द्रगच्छ के संस्थापक), (820) पार्श्वचन्द्रगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (821) पार्श्वनाथ जिनालय, भीलाड, उमरगाम, वलसाड, (822) पावारग, (823) पाशमृग, (824) पितृग्राम :, (825) पीवरगब्भा, (826) पुंडरिगिणि, (827) पुखराग, (828) पुण्यनन्दि (खरतरगच्छीय), (829) पुण्यसागरगुरुगीतम, (830) पुत्राग, (831) पुरिसवरगंधहत्थि, (832) पुरिसवरगंधहत्थी, (833) पुष्करद्वीपगत और शेष सब द्वीप-समुद्रगत चन्द्र-सूर्यो के चन्द्र-सूर्य द्वीपों का प्ररूपण, (834) पुष्पशृग्ङ, (835) पूतरग, (836) पूर्वपुत्र भ. महावीर के दर्शन-स्नेह एवं राग से देवानन्दा के स्तनों में दूध आ गया, (837) पृथ्वीचंद्रगुण सागर रास, (838) पृथ्वीचन्द्रगुणसागररास, (839) पेम्माणुराग, (840) पोंडरिगिणी, (841) पोक्खरगय, (842) पोरग, (843) पोरपरिग्गहं, (844) प्रकट परग्रामविषयक अभ्याहृत, (845) प्रग, (846) प्रगत , (847) प्रगत्य, (848) प्रगन्यावंत, (849) प्रगल, (850) प्रगलचित्त, (851) प्रगल्भा, (852) प्रगल्भा + विजया, (853) प्रगाढा, (854) प्रगुणं, (855) प्रगुहीततरं, (856) प्रगुहीता, (857) प्रगृहीता, (858) प्रगृहीता ग्रहणैषणा, (859) प्रग्रह :, (860) प्रग्रहस्थान : राजा आदि, आचार्य आदि , (861) प्रघल, (862) प्रच्छन्न परग्रामविषयक अभ्याहृत, (863) प्रज्ञप्ति, (864) प्रज्ञप्तिकुशल, (865) प्रज्ञप्तिविद्या, (866) प्रज्ञा, (867) प्रज्ञा परीषह, (868) प्रज्ञातिलक, (869) प्रज्ञातिलक (कवि), (870) प्रज्ञातिलक(सूरि) शिष्य, (871) प्रज्ञान, (872) प्रज्ञापक, (873) प्रज्ञापक दिशा, (874) प्रज्ञापनसूत्र बाला. , (875) प्रज्ञापना, (876) प्रज्ञापना द्वार, (877) प्रज्ञापना सूत्र बालावबोध, (878) प्रज्ञापनाप्रियः, (879) प्रज्ञापनासूत्र (शुद्धिपत्रक), प्रकाशक - आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, शुद्धिकार - अज्ञात, (880) प्रज्ञापनासूत्र टबार्थ , (881) प्रज्ञापनासूत्र बालावबोध, (882) प्रज्ञापनी, (883) प्रज्ञापनी भाषा , (884) प्रज्ञापनीभाषा, (885) प्रज्ञापनीयः, (886) प्रज्ञापरीषह, (887) प्रज्ञापारमित, (888) प्रज्ञाप्तं, (889) प्रज्ञाप्तंभूमि :, (890) प्रज्ञाभावच्छेदना, (891) प्रज्ञावशार्तमरण, (892) प्रज्ञाश्रवण, (893) प्रतरगत-समुद्रात, (894) प्रतरगतकेवलिक्षेत्र, (895) प्रतिचारग, (896) प्रत्याख्यानपरिज्ञा, (897) प्रभाकरगुणाकरचौपाइ, (898) प्रभुनुं सिंहासन सुवर्णमय के स्फटिकमय, पत्रचर्चा - निरागचन्द्रसागर, (899) प्रयोगसम्पदा : परिषद्परिज्ञान आदि , (900) प्रशस्त राग, (901) प्रशस्तरागः, (902) प्रशस्य आचार्य : आगाढप्रज्ञ आदि , (903) प्राग, (904) प्रागजी, (905) प्रागजी - १, (906) प्रागजी - २, (907) प्रागजी - ३ , (908) प्रागदत्त, (909) प्रागदास, (910) प्रागभाव, (911) प्रागभावः, (912) प्रागम्य, (913) प्रागराज, (914) प्रागुण, (915) प्रागो, (916) प्राग्भार, (917) प्राग्भार-भू, (918) प्राग्भारवसुधा, (919) प्राग्भारा, (920) प्राग्रय्, (921) प्राग्रहर, (922) प्राग्विदेह, (923) प्राघुण, (924) प्राघुर्णुकु, (925) प्राज्ञ, (926) प्राज्ञः, (927) प्राज्ञश्रमण, (928) प्राज्ञाप्त, (929) फरुगद्दभ, (930) फासपरियारगा, (931)

बंभचेरगुत्ती, (932) बद्धरागवेदनीयपुद्गल, (933) बरग, (934) बरगुं, (935) बरघू, (936) बलभद्रमुनि वैराग्य सज्झाय, (937) बलश्री मृगापुत्र, (938) बलात्कारगण, (939) बारगइ, (940) बारगरी, (941) बारगहइं, (942) बारह वर्ष सूत्रग्रहण, बारह वर्ष अर्थग्रहण , (943) बाहिरगा, (944) बाहिरगिरिपरिरओ, (945) बाह्य-आभ्यंतर परिग्रह , (946) बाह्यपरिग्रहविरति, (947) बिना आज्ञा पात्रग्रहण से प्रायश्चित , (948) बिलकोलीकारग, (949) बीतराग पच्चीसी, (950) बीतराग वंदना , (951) ब्रघ्नमंडल, (952) ब्रह्मचन्द्रगणि, (953) ब्रह्मचर्य का विघ्न : दृष्टिराग , (954) भ. महावीर के चतुर्थ मासखमण के पारणे में पांच दिव्य प्रगटे, (955) भ. महावीर के तीर्थ में मृगापुत्र बलश्री श्रमण, (956) भ. महावीर के तृतीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे, (957) भ. महावीर के द्वितीय मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे, (958) भ. महावीर के प्रथम मासखमण के पारणे में पाँच दिव्य प्रगटे, (959) भ. महावीर के समीप चमरेन्द्र का पुनरागमन, (960) भक्त परिज्ञा, (961) भक्तपरिज्ञ, (962) भक्तपरिज्ञा, (963) भक्तपरिज्ञा : सपराक्रम-अपराक्रम , (964) भक्तपरिज्ञा और इंगिनीमरण में अंतर , (965) भक्तामर स्तोत्र रागमाला , (966) भक्तामरस्तोत्र रागमाला, (967) भक्तिलाभ (खरतरगच्छीय), (968) भगवान ने मृगापुत्र के स्वरूप का निरूपण किया, (969) भग्गरुग्ग, (970) भज्जाणुराग, (971) भट्टारग, (972) भत्तिराग, (973) भद्रगमहिषी, (974) भद्रगुप्त (आचार्य), (975) भद्रगुप्ताचार्य कथा, (976) भद्रगुप्तिक, (977) भरगा, (978) भवनवासी देवों के परिघानों (वस्त्रों) का वर्ण, (979) भवरागाभाववान्, (980) भववैराग्य शतक टबो , (981) भववैराग्य शतक बालावबोध , (982) भववैराग्य शतक भय बाला. , (983) भववैराग्यशतक टबो , (984) भावप्रभसूरिगीत, (985) भाववैराग्य शतक , (986) भिंगारग, (987) भीडभंजन लींबु पार्श्वनाथ जिनालय, नंदीगाम, उमरगाम, वलसाड, (988) भूतिप्रज्ञ, (989) भृगु, (990) भृगु पुरोहित, (991) भृगु पुरोहित चोपाई , (992) भृगुअपत्य, (993) भृगुकच्छ, (994) भृगुपुरोहित चोपाई , (995) भृग्डनिभा, (996) भृग्डप्रभा, (997) भृग्डा, (998) भ्रमरगीता , (999) भ्रमरगीता- फाग, (1000) भ्रमरघोष, (1001) मंगलधर्म [रत्नाकरगच्छीय], (1002) मंदारगिरि, उत्तरप्रदेश-बिहार-बंगाल, (1003) मगरिग, (1004) मनोज्ञ और अमनोज्ञ काम भोगों में राग-द्वेष का निग्रह करना चाहिए , (1005) मन्दवैराग्यम्, (1006) मयहरिगा, (1007) मयूरग्रीव, (1008) मरगय, (1009) मरगयजादर, (1010) मरगी, (1011) मरुग, (1012) मसारगल्ल, (1013) मसारगल्व, (1014) महब्बल ने प्रव्रज्या ग्रहण करने की इच्छा प्रगट की, (1015) महापरिज्ञा, (1016) महाप्रज्ञ, (1017) महाप्रज्ञप्ति, (1018) महाप्रज्ञापना, (1019) महाप्राज्ञ, (1020) महावीर रागमाला, (1021) महावीर स्तवन रागमाला , (1022) महावीरगीत, (1023) महावीरस्वामी-घरदेरासर जिनालय, पारस सोसायटी, कतारगाम , सुरत, (1024) महिंदु [महाचन्द खरतरगच्छीय], (1025) महिमासागर [खरतरगच्छीय], (1026) महेन्द्रगिरि, (1027) महेन्द्रसूरि [नागेन्द्रगच्छीय], (1028) महोरग , (1029) माणिक्यसुन्दरगणि [बृहद्गच्छीय], (1030) मातृग्राम, (1031) मारगु, (1032) मारमारगउदीपक, (1033) माहुरग, (1034) मित्रानुराग, (1035) मित्रानुराग अतिचार, (1036) मिरगानेंणी, (1037) मिश्रगुणस्थान, (1038) मिश्रग्रहणाद्धा, (1039) मुद्गरगुल्म, (1040) मुनिचन्द्रगुरुस्तुति, (1041) मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय, खतलवाडा, उमरगाम, वलसाड, (1042) मुरग, (1043) मूरग, (1044) मूल-उत्तरगुण भंग से चारित्र भंग, (1045) मूलगुण-उत्तरगुण कब तक ? , (1046) मूलगुण-उत्तरगुण-प्रतिसेवना : अतिक्रम...संरंभ , (1047) मूलयवान् पात्रग्रहण का निषेध , (1048) मृग, (1049) मृग गांव में विजय राजा का पुत्र मृगापुत्र, (1050) मृग पुरोहित छहढ़ालिया , (1051) मृग प्रोहित चौ. , (1052) मृग लोढ़ा अधिकार , (1053) मृग वसावुं, (1054) मृग सुंदरी, (1055) मृग सुंदरी महात्म्य , (1056) मृग सुंदरी माहात्म्य गर्भित छंद , (1057) मृग-द्विप, (1058) मृगकोष्ठक, (1059) मृगग्राम, (1060) मृगचर्या वृति , (1061) मृगचारिका, (1062) मृगचारित्र, (1063) मृगचारी, (1064) मृगचिह्न, (1065) मृगचूल, (1066) मृगडउ, (1067) मृगध्वज, (1068) मृगध्वज चोपाई , (1069) मृगध्वज चौपइ, (1070) मृगनाभि, (1071) मृगनाभिज, (1072) मृगपति, (1073) मृगपुत्र रास, (1074) मृगमद, (1075) मृगमदपूर, (1076) मृगमांस, (1077) मृगया-विनोद, (1078) मृगयाव्यसन, (1079) मृगयु, (1080) मृगयोषित, (1081) मृगरिदमन, (1082) मृगलुब्ध, (1083) मृगलुब्धक, (1084) मृगलोअणि, (1085) मृगलोचना, (1086) मृगलोढीओ (मृगापुत्र), (1087) मृगलोयणी, (1088) मृगवधक और उसके वधक की क्रियाओं का प्ररूपण, (1089) मृगवधक की क्रियाओं का प्ररूपण, (1090) मृगवन, (1091) मृगवाहन, (1092) मृगशिरस्, (1093) मृगश्रृंग, (1094) मृगश्रृंगिणी, (1095) मृगसुंदरी माहात्म्य गर्भित छंद , (1096) मृगसुंदरी माहात्म्यगर्भित छंद , (1097) मृगा, (1098) मृगा दे, (1099) मृगांक, (1100) मृगांक कुमार चौपइ, (1101) मृगांक पदमावती चौपइ, (1102) मृगांक पदमावती रास, (1103) मृगांक लेखा चरित, (1104) मृगांक लेखा चरित्र , (1105) मृगांक लेखा रास, (1106) मृगांकलेखा रास , (1107) मृगांकलेखा रास, (1108) मृगांकलेखा- रास, (1109) मृगांकलेखाचरित्र, (1110) मृगांकलेखानी चोपाई, (1111) मृगांकुश, (1112) मृगाङ्कलेखारास, (1113) मृगादेवी, (1114) मृगापुत्र, (1115) मृगापुत्र (बलश्री) कथा, (1116) मृगापुत्र (मृगालोढा), (1117) मृगापुत्र (वैराग्यवंत), (1118) मृगापुत्र कथानक, (1119) मृगापुत्र का उत्तर, (1120) मृगापुत्र का जन्मान्ध आदि रूप देखकर मृगावती का उसे उकरडी पर फिंकवाने का संकल्प, (1121) मृगापुत्र का प्रव्रज्या-संकल्प और माता-पिता से निवेदन, (1122) मृगापुत्र का भूमि घर में स्थापन, (1123) मृगापुत्र की जन्मान्धता आदि, (1124) मृगापुत्र की प्रव्रज्या, (1125) मृगापुत्र के आगामि भव का वर्णन, (1126) मृगापुत्र के पूर्वभव की की एक्काइ " नामक राष्ट्रकूट कथा, (1127) मृगापुत्र के वर्तमान भव के वर्णन में मृगादेवी की वेदना और गर्भपात कराने का विचार, (1128) मृगापुत्र चोपाई, (1129) मृगापुत्र चौपइ, (1130) मृगापुत्र चौपई , (1131) मृगापुत्र चौपई अथवा संधि, (1132) मृगापुत्र ने नरक के दुखों का वर्णन किया और श्रमण जीवन की दुष्करता का निराकरण किया, (1133) मृगापुत्र संधि , (1134) मृगापुत्र सज्झाय, (1135) मृगापुत्र सझाय, (1136) मृगापुत्र सन्धि, (1137) मृगापुत्रचौपाइ, (1138) मृगापुत्रनी कथा, (1139)

मृगापुत्ररास, (1140) मृगापुत्रसंधि, (1141) मृगापुत्रीय, (1142) मृगायण, (1143) मृगालोढा, (1144) मृगावती, (1145) मृगावती आख्यान , (1146) मृगावती कथा, (1147) मृगावती चरित्र चौपइ , (1148) मृगावती चरित्र चौपइ या मोहन बेल, (1149) मृगावती चोपाई, (1150) मृगावती चौपइ , (1151) मृगावतीचरित्र- चोपाइ, (1152) मृगावतीचरित्र- रास, (1153) मृगावतीचौपाइ, (1154) मृगासुंदरी, (1155) मृगेन्द्र, (1156) मृगेन्द्रकेतन, (1157) मृगेन्द्रवाहन, (1158) मृगेश वर्मन, (1159) मृगेशदमन, (1160) मृगैर्वारु, (1161) मृगोद्धर्मा, (1162) मेरुगणि [आगमगच्छीय], (1163) मेरुतुंग [नागेन्द्रगच्छीय], (1164) मेरुनन्दनगणि [खरतरगच्छीय], (1165) मेरुसुन्दर [खरतरगच्छीय वाचनाचार्य रत्नमूर्ति के शिष्य], (1166) मेरुसुन्दर उपाध्याय [खरतरगच्छीय], (1167) मोग्गरग, (1168) मोयारग, (1169) मोरग, (1170) मोराग, (1171) मोहगर्भितवैराग्यम्, (1172) म्रगमद, (1173) म्रघडो, (1174) म्रुगापुत्र को जातिस्मृति , (1175) यतमानवैराग्यम्, (1176) यशोभद्रसूरिगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (1177) यात्रागत राजा का आहार ग्रहण करने के प्रायश्चित्त सूत्र , (1178) यामिनी भानु मृगावती चौपइ, (1179) यामिनीभानु मृगावती चोपाई , (1180) युगलिकोमां कोई अभव्यनो आत्मा होय के नहीं ?, लेखक - मुक्तिपरागविजय, (1181) युवा दृढ़प्रतिज्ञ को वैराग्य, (1182) रइकरग, (1183) रइकरगपव्वय, (1184) रगइ, (1185) रगझग, (1186) रगडा, (1187) रगत, (1188) रगत-लोचन, (1189) रगतनेत्र, (1190) रगतिया, (1191) रगरगे, (1192) रगसिगा, (1193) रगाउलि, (1194) रगिया, (1195) रगिल्ल, (1196) रगे, (1197) रग्गय, (1198) रघवघो, (1199) रघु, (1200) रघुनंदन, (1201) रघुनाथ, (1202) रघुनाथ जी (आचार्य), (1203) रघुनाथ राव, (1204) रघुनाथ-रघुपति, (1205) रघुनाथदास, (1206) रघुपति, (1207) रघुराम, (1208) रघुराम - १ , (1209) रघुवंश , (1210) रघुवंश टीका, (1211) रघो, (1212) रत्नकीर्ति [खरतरगच्छीय], (1213) रत्नमूर्ति वाचनाचार्य [खरतरगच्छीय], (1214) रत्नसिंह [रत्नाकरगच्छ के संस्थापक], (1215) रत्नसिंह [रत्नाकरगच्छीय], (1216) रत्नाकरगच्छ, (1217) राग, (1218) राग कषाय के प्रकार , (1219) राग द्वार, (1220) राग पाप, (1221) राग पापस्थान, (1222) राग शमन के उपाय , (1223) राग संयुक्त स्त्रीकथा वर्जन, (1224) राग-द्वेष की वृद्धि से प्रायश्चित-वृद्धि , (1225) रागः, (1226) रागजन्य क्षिप्तता : मृत्युदर्शन बोध , (1227) रागद्वेषौ, (1228) रागवसिइं, (1229) रागा राजसिंह, (1230) रागिनी, (1231) राघव, (1232) राघवदास, (1233) राघाचार्य, (1234) राघावदास - २, (1235) राघोदास, (1236) राजतंरगिणी, (1237) राजरत्नसूरि [खरतरगच्छीय], (1238) राजशील [खरतरगच्छीय साधुहर्ष के शिष्य], (1239) राजशील [खरतरगच्छीय], (1240) राजशेखरसूरि [मलधारगच्छीय], (1241) रात्रिगमन निषेध , (1242) रात्रिभोजनविरमण उत्तरगुण , (1243) रिगिसिगि, (1244) रिगिसिगिआ, (1245) रिगिसिगी, (1246) रिग्ग, (1247) रिग्ग (गम्), (1248) रिग्ग (प्र + विश्), (1249) रुगण, (1250) रइषत् प्रागभारा, (1251) लावण्यसिंह [खरतरगच्छीय], (1252) लाहौरगजल, (1253) लिंगधारक श्रेणिबाह्य : शर्कराघट दृष्टांत , (1254) लोकशृग्ङ, (1255) लोकालोक प्रज्ञप्ति, (1256) वइरागर, (1257) वइरागे, (1258) वक्षारगिरि, (1259) वज्त्रघोष, (1260) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना, (1261) वज्रशृग्ङ, (1262) वध्य पुरुष के दर्शन से वैराग्य और प्रव्रज्या, (1263) वयरागइ, (1264) वयरागर, (1265) वरग, (1266) वरगडु, (1267) वरगां, (1268) वरघनुष्क, (1269) वरतुरग, (1270) वशीकारवैराग्यम्, (1271) वस्त्र-पात्र एषणा हेतु क्षेत्रगमन-सीमा , (1272) वारग, (1273) वारगहै, (1274) वाराणसी से कुछ दूर मृतांगद्रह के समीप मालुका कच्छ के किनारे दो पापी श्रुगाल, (1275) वालिखरग, (1276) वासुपूज्यस्वामी जिनालय, GIDC, उमरगाम, वलसाड, (1277) वासुपूज्यस्वामी जिनालय, अच्छारी, उमरगाम, वलसाड, (1278) वासुपूज्यस्वामी जिनालय, उमरगाम, वलसाड, (1279) विचारग्रंथबालावबोध, (1280) विचारज्ञ, (1281) विचित्रगुप्त, (1282) विजयदेव का चोपाल नामक शस्त्रागार, (1283) विज्जाहरगोवाल, (1284) विद्याधरकुल / विद्याधरगच्छ , (1285) विद्याधरगोपाल, (1286) विनयप्रभ [खरतरगच्छीय], (1287) विपर्ययदुराग्रहः, (1288) विमलनाथ जिनालय, देवीयर, उमरगाम, वलसाड, (1289) वियरग, (1290) विराग, (1291) विराग विचय, (1292) विरागः, (1293) विरागता, (1294) विरागविचय, (1295) विवेकधीरगणि, (1296) विवेकरत्नसूरि [खरतरगच्छीय], (1297) विवेकसिंह [खरतरगच्छीय-पिप्पलकशाखा], (1298) विषय राग, (1299) विषय-विराग ही ब्रह्मचर्य , (1300) विषयराग से गुरु प्रायश्चित्त, (1301) विषयानुरागः, (1302) विसंभोज : उत्तरगुणों में , (1303) विहारगिह, (1304) विहारगृह, (1305) विहारगेह, (1306) वीतराग, (1307) वीतराग कथा, (1308) वीतराग के कर्मबंध , (1309) वीतराग वंदना , (1310) वीतराग विज्ञप्ति (मरुगुर्जर की रचना), (1311) वीतराग संयम, (1312) वीतरागः, (1313) वीतरागइजिनुं, (1314) वीतरागकथा, (1315) वीतरागचारित्र, (1316) वीतरागश्रुत, (1317) वीतरागसंयम, (1318) वीतरागसम्यक्त्व, (1319) वीतरागस्तवन, (1320) वीतरागस्तोत्र, (1321) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, पत्रचर्चा - गोयमचन्द्रविजय, (1322) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, पत्रचर्चा - त्रैलोक्यमंडनविजय, (1323) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, पत्रचर्चा - हेमनिलयविजय, (1324) वीतरागी को भी मृषावाद कैसे ?, लेखक - गोयमचन्द्रविजय, (1325) वीयरग, (1326) वीयरागसुअ, (1327) वीरगत, (1328) वीरगय, (1329) वीरघोष, (1330) वीरघोस, (1331) वीरशृग्ङ, (1332) वीरागंद चौपई, (1333) वीराग्ङक, (1334) वेभारगिरि, (1335) वेरागर, (1336) वेराग्य, (1337) वेहारुग, (1338) वैक्रियपरदारगमन, (1339) वैताढ्य...मंदरगिरी का अवगाहन , (1340) वैनयिकी प्रज्ञा, (1341) वैभारगिरि, (1342) वैभारगिरि, उत्तरप्रदेश-बिहार-बंगाल, (1343) वैरशृग्ङ, (1344) वैराग्य, (1345) वैराग्य कुल, (1346) वैराग्य गीत, (1347) वैराग्य गीतो, (1348) वैराग्य छ्तीसी , (1349) वैराग्य छ्तीसी वैद्यकसार, (1350) वैराग्य छ्त्रीसी , (1351) वैराग्य बावनी , (1352) वैराग्य भावना : अनित्य भावना आदि , (1353) वैराग्य विनति, (1354) वैराग्य विनती, (1355) वैराग्यकारणम्, (1356) वैराग्यकुल, (1357) वैराग्यपूर्णता, (1358) वैराग्यफलम्, (1359) वैराग्यभावना, (1360) वैराग्यम्, (1361) वैराग्यविनति, (1362) वैराग्यवीनती, (1363) वैराग्यसाधनम्, (1364)

वैराग्यसार, (1365) व्यतिरेकवैराग्यम्, (1366) व्याख्याप्रज्ञप्ति, (1367) व्याख्याप्रज्ञप्तिः, (1368) व्याख्याप्रज्ञप्तिधर, (1369) व्याख्याप्रज्ञप्तिपरिकर्म, (1370) शत्रुघ्न, (1371) शब्द-रूपराग-वर्जन , (1372) शरीर सम्पन्न और प्रज्ञा सम्पन्न , (1373) शरीरपरिग्रह, (1374) शस्त्रपरिज्ञा, (1375) शांति मृगसुंदरी चोपाई , (1376) शांतिमृगसुंदरी चोपाई , (1377) शांतिसूरि [संडेरगच्छीय], (1378) शाखामृग, (1379) शान्तिमंदिर [खरतरगच्छीय], (1380) शान्तिसूरि [नागेन्द्रगच्छीय], (1381) शामळा पार्श्वनाथ जिनालय, वलवाडा, उमरगाम, वलसाड, (1382) शास्त्रज्ञानम्, (1383) शिवसुन्दर [खरतरगच्छीय], (1384) शिवसुन्दरगणि, (1385) शीतलनाथ जिनालय, फणसा, उमरगाम, वलसाड, (1386) शील सम्पन्न और दुश्शील सम्पन्न, शील प्रज्ञावान और दुश्शील प्रज्ञावान , (1387) शुद्ध और शुद्ध प्रज्ञावान,अशुद्ध और अशुद्ध प्रज्ञावान , (1388) शृग्ङाटक, (1389) शृग्ङायन, (1390) श्रमण : उरग, गिरि आदि उपमाएं , (1391) श्रमणधर्म में मूलगुण-उत्तरगुण , (1392) श्रुगालों को देखकर कछुओं ने अपने अंगों को संकुचित कर लिए , (1393) श्रुगालों ने अंग संकुचित न करने वाले कछुये को मार डाला, (1394) श्रेणिक को कारागृह में बन्द करके कूणिक ने राज्य श्री प्राप्त की, (1395) श्रोत्रग्राह्यविवर्जन, (1396) श्रोत्रप्रज्ञान, (1397) श्रोत्रेन्द्रियरागोपरति, (1398) षटप्रज्ञदास, (1399) संगपरिज्ञा योगसंग्रह, (1400) संगरिगा, (1401) संग्रहपरिज्ञा : क्षेत्र आदि की व्यवस्था , (1402) संग्रहपरिज्ञासम्पदा, (1403) संचारगति, (1404) संजय राजा ने मुनि के समीप मृगवध किया, (1405) संडेरगच्छ, (1406) संडेरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास , (1407) संथारग, (1408) संथारग पईन्ना बालावबोध , (1409) संवरगुण, (1410) संवृत अणगार का संसार परिगमन , (1411) संसार वैराग्य , (1412) संस्कारगुणः, (1413) सङ्गपरिज्ञा, (1414) सचित्तपरिग्रह, (1415) सतपोरग, (1416) सत्त्वपरिगृहीत्व, (1417) सत्य वक्ता और असत्य वक्ता, सत्य प्रज्ञा और असत्य प्रज्ञा , (1418) सन्देहपारग, (1419) समयप्रभ [खरतरगच्छीय], (1420) समयभक्त [खरतरगच्छीय], (1421) समरचन्द्र [पार्श्वचन्द्रगच्छीय], (1422) समुद्रगक, (1423) समुद्रगुप्त, (1424) समुद्रघोष, (1425) समुद्रघोषसूरि [पूर्णिमागच्छीय], (1426) समेतशिखरगिरि पूजा , (1427) समेतशिखरगिरि रास , (1428) सम्प्रज्ञातसमाधिः, (1429) सरग, (1430) सरघा, (1431) सरघा छतीसी, (1432) सरघू, (1433) सराग, (1434) सराग चारित्र, (1435) सराग भक्ति, (1436) सराग संयम, (1437) सराग संयमादियोग, (1438) सराग सम्यक्त्व, (1439) सराग सम्यग्दर्शन, (1440) सरागचर्या, (1441) सरागचारित्र, (1442) सरागसंयम, (1443) सरागसम्यक्त्व, (1444) सर्वत्रग, (1445) सर्वथा रागः, (1446) सर्वपरिग्रहविरमण, (1447) सर्वसुन्दरसूरि (मलधारगच्छीय), (1448) सहस्त्रग्रीव, (1449) सहस्त्रघोष, (1450) सांयात्रिकों (नावावणिकों) का पुनरागमन, (1451) सागरचन्द्रसूरि (खरतरगच्छीय), (1452) सागरप्रज्ञति, (1453) साधुमेरुगणि, (1454) साधुसुन्दरगणि, (1455) साधुहर्ष (खरतरगच्छीय), (1456) साभरग, (1457) सिंह-वृषभ-मृग-परिषद्, (1458) सिद्धस्थान परिज्ञा, (1459) सिरघू, (1460) सिरिगिरि, (1461) सिरिगुत्त, (1462) सीभरग, (1463) सीमंधरस्वामी जिनालय, नंदीगाम, उमरगाम, वलसाड, (1464) सुन्दरगुरुयोगः, (1465) सुरग, (1466) सुरगइ, (1467) सुरगवि, (1468) सुरगिरि, (1469) सुरगुर, (1470) सुरगुरवि, (1471) सुरगुरु, (1472) सुरगो, (1473) सुरग्गिदीवायण, (1474) सुरघट, (1475) सुराग्गिद्वीपायन, (1476) सुरामरगुरु, (1477) सुविधिनाथ जिनालय, अच्छारी, उमरगाम, वलसाड, (1478) सुहृदनुराग, (1479) सूत्रग्रहण-प्रतिबोध : गज-श्लीपदी दृष्टांत , (1480) सूत्रग्रहणविधिः, (1481) सूत्रग्राहणविनय, (1482) सूरप्रज्ञप्ति, (1483) सूरिगिरि, (1484) सूर्यप्रज्ञति, (1485) सूर्यप्रज्ञप्ति, (1486) सृग, (1487) सोपारग, (1488) सोप्पारग, (1489) सोमकुंजर (खरतरगच्छीय), (1490) सोमचन्द्र (नागेन्द्रगच्छीय), (1491) सोमचरित्रगणि (तपागच्छीय), (1492) सोममूर्ति (खरतरगच्छीय), (1493) स्त्रगांग, (1494) स्त्री राग निषेध , (1495) स्त्रीपरिज्ञा, (1496) स्थितप्रज्ञः, (1497) स्थिरगुप्त, (1498) स्थिरप्रज्ञा, (1499) स्थूल परिग्रह परिणाम व्रत के अतिचार, (1500) स्थूल परिग्रहविरमणव्रत, (1501) स्थूलपरिग्रह विरमण व्रत के 5 अतिचार, (1502) स्नेहराग, (1503) स्नेहरागः, (1504) स्पर्शनेन्द्रियरागोपरति, (1505) स्वयंसंबुद्ध तीर्थंकरोना वैराग्यनिमित्तो !, लेखक - आत्मकीर्तिविजय, (1506) स्वयम्भूरण समुद्रगत चन्द्र-सूर्यो के चन्द्र-सूर्य द्वीपों का प्ररूपण, (1507) स्वसमयप्रज्ञापक, (1508) स्वसमयप्रज्ञापकः, (1509) स्वस्तिकशृग्ङ, (1510) स्वगुरुस्थानसंक्रान्ति, (1511) हरगोवन, (1512) हरगोवनदास, (1513) हरगोविंद, (1514) हरिगिरि, (1515) हरिग्रीव, (1516) हरिघोष, (1517) हरिभद्रसूरि [नागेन्द्रगच्छीय], (1518) हर्षप्रिय उपाध्याय [खरतरगच्छीय], (1519) हर्षमूर्ति [भावडारगच्छीय], (1520) हीरागळ, (1521) हेमचंद्रगणि रास